Vol 5 Issue 10 April 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldgrt.lbp.world

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 10 | April - 2016

Golden Research Thoughts

अंधायुग की भाषा

फरांदे गीतांजली राजेंद्र
तृतीय वर्ष कला, हिंदी,
मु. सा. काकडे महाविद्यालय, सोमेश्वरनगर, ता. बारामती, जि. पुणे.

प्रस्तावना : –

यदि भाव कविता का प्राण है तो भाषा कविता का शरीर है। भाषा कवि के विचारों,भावो तथा अनुभूतीयों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम होती है। भाषा के माध्यम से ही कोई कवि अपने विचारों भावों तथा अनुभूत सत्यों को उदघाटित करने का प्रायस करता है। इस प्रायस में कवि को सर्व प्रथम कथानक के योग्य भाषा का प्रयोग, पात्रों की मानसिकता के अनुकूल शब्दावली, वातावरण की दृष्टि से रोचक मार्मिक मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करना चाहिए। या यो कहिए भावानुकूल भाषा का प्रयोग कवि को अपनी भाषा का प्रयोग करना चहिए। यदि कथानक पौराणिक होने के साथ साथ मिथकों का योग्य निर्वाह करता है, तो कवि की कसौटी है कि वह सांकेतिक, प्रतीकात्मक, बिंबात्मक एवं अलंकरिक भाषा का प्रयोग करता रहें। किसी कृति की सफलता उसकी भाषा में ही निहित नहीं होती है, बल्कि उस कविता की शैली रोचक सांकेतिक आदि होनी चाहिए। कवि के ढंग को शैली कहा जाता है।

धर्मवीर भारती लिखित 'अंधायुग' एक सफल मंचीय नाटक है। धर्मवीर भारती ने अंधायुग नाटक के माध्यम से पौराणिक कथा को अधार बनाकर आजक के जीवन की वास्तविकता युद्ध के उपरांत निर्माण हुई विभाषिक और भयानक परिस्थितियॉ इन सबका अत्यंत व्यापक और मार्मिक चत्रण किया है। गीतिनाट्य के इस संपूर्ण कथानक को मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त करने के लिए सशक्त, परिमार्जित, पात्रानुकूल, प्रभावशाली तथा अन्यान्य गुणों से युक्त भाषा का होना अत्यंत आवश्यक था। धर्मवीर भारती ने अंधायुग को अभिव्यक्त करने ले लिए ऐसी ही प्रभावोत्पादक भाषा का प्रयोग किया है जिसे अध्ययन की सुविधा के लिए निम्नलिखित रूप में व्यक्त कर सकते है।

धर्मवीर भारती लिखित अंधायुग गीतिनाट्य की भाषा–शैली को निम्नलिखित विशेषताओं में विभाजित किया जा सकता है।

१.शब्द समूहः–

अंधायुग में प्रचलित भाषा तथा शुद्ध साहित्यिक खडीबाली का प्रयोग इन दोनों के मिश्रण से बनी अनोखी भाषा 'अंधायुग' की अपनी विशेषता है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। नाटककार ने अपनी भाषा को संपन्न बनाने के लिए संस्कृतनिष्ट तत्सम शब्दावली, तदभव, अन्य बोलियों की शब्दावली अरबी–फारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग आदि के माध्यम से नाटककार ने अपनी है, जो भाषा को संपन्न समृदध बनाया है।

अ. संस्कृतनिष्ट तत्सम शब्दावलीः–

कवि ने तत्सम् बहुल शब्दावली का प्रयोग अधिक मात्रा में किया है। शब्दावली में पौराणिक कथा का आधार होने कारण अंधायुग में तत्सम् शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में दिखाई देता है। जैसेः भविष्य, अनासक्त, रक्षक, ज्ञात, ब्रहमास्त्र, पृथ्वी, खंडित, विचारण, दायित्व, अर्धसत्य, मानव, जन्मांध, ग्रहण, निर्मल, लिप्सा, परात्पर, अस्वीकार, विवेक, ममता, याचक, निहत्या, आदि।

ब. तदभव शब्दावली:—

नाटक की संवाद योजना को सफल और मार्मिक के लिए धर्मवीर भारती ने पात्रानुकूल संवादों की योजना के लिए तत्सम शब्दावली का भी प्रयोग किया है— उलझी, बैनी, कटार, झाडी,लोलुप, जिभे, मुंड, पसंतियॉ, झपट, उछल, उबल, पैदल, कलाईयॉ,पोंछि आदि।

क. अरबी—फारसी शब्दावली:—

कवि ने संवादों की मर्मिकता के लिए अरबी—फारसी शब्दावली का प्रयोग भी किया है— बर्बर, सेंदुर, चुडियाँ, माया, फाड़—खाना, पागल, हिना, लोप, आदि। ये सारे तदभव शब्द नाटक की संवाद योजना को सफल बनाने का महत्वपूर्ण कार्य करते है।

ड. लोकभाषा के शब्द:—

माथा, खिडकी, अंधरे, होठ, बिलबिलाना, रेंगना, सुनसान, छकडों, लपट, झकझोरा। समग्र रूप में कहा जा सकता है कि कवि ने भाषा के द्वारा वातावरण निर्माण में पूरा सहयोग लिया है।

२. लाकक्षणिकता प्रयोग :—

अंधायुगेः की भाषा में कई स्थानौं पर लाक्षणिक प्रयोगों से भी आभिव्यक्त को पर्णतः प्रदान की गई है। यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत है—

"आज नहीं बच पाएगा
वह इन भूखे पजों से"

यहाँ 'भूखों पजों में लाक्षणिक प्रयोग ह। इनका लक्ष्यार्थ है मेरे ह्रदय में व्याप्त प्रतिशोध की भावना और दूसरों का वध करने की इच्छा। इसी प्रकार का एक अन्य प्रयोग है—

''गांधारी पत्थर थी"

यहाँ गाधारी को पत्थर कहा गया है। इसका लक्ष्यार्थ है कि गाधारी संजय से युध्द कथा सुनते सुनते बिलकुल पत्थर की तरह भाव शून्य एवं कठोर हो गई थी।

३.भावानुकूल भाषा का प्रयोग:—

कविता सुंदर भावों की सुंदर अभिव्यक्त है, तो गीतिनाट्य सर्वोत्तम भावोया की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है। संवादों की संप्रेषणीयता और शब्दावली के माध्यम से अमूर्त भावों को मूर्तरूप देने की कला गीतिनाट्यकार के पास होती है। इसलिए कवि हमेंशा इस बात का ध्यान रखता है कि प्रयोग पात्रों के भावों के अनुकूल होना चाहिए। जैसे,

गांधारी के मन में एक तरफ सौ पुत्रों के प्रति कोमलता ओर मातृत्व की भावना विद्यमान है जो अपने ममतामय ह्रदय को अपने ही सवादों द्वारा अभिव्यक्त करना चाहती है—

''रोई नहीं मै अपने
सौं पुत्रों के लिए
लेकिन कृष्ण
तुम पर मेरी ममता अगाध है
कर देते यह मेरा अस्वीकर तुम।
तोक्या मुझे दुख होता।
मैं थी निराश, मै कटु थी, पुत्र हीना थी।"

४. बिंबात्मक भाषा का प्रयोग :—

अंधायुग के बिबों की बड़ी विशेषता यह है कि ये बिबं तिखोपण का दर्शन करतें है। जैसे—सुना गलियारा, धधकता हुआ बरगत, दहाड़ता हुआ समुद्र, सैंकडों केंचुल, कोसों तक धरती, अंधी समुद्र आदि। विशेषाओं का प्रयोग कर गरिमामय बनाने की कोशिश की है।

५. प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग:—

अंधायुग के कथानक में प्रतीकात्मक प्रसगों की सृष्टि के लिए कवि ने प्रतीकात्मक शब्दावली का प्रयोग विशेष रूप से किया हुआ दिखाई देता है। जैसे—

''अंधो से शोभित था युग का सिहांसन।''

इसमें 'अंधो' से शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप में भोहांधर और विवेक शून्य शासकों के अर्थ में किया गया है। जैसे—

''मेरे अंधेपन से तुमसे उत्पन्न पुत्र।''

६. आलंकारिक भाषा का प्रयोगः–

कवि भारती ने अपनी भाषा के अलंकारों से सजाकर सॅवारकर प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।जैसे–मूक भाषा की अभिव्यक्ति के लिए कवि ने सांगरूपक अलंकर का आधार लेकर भाषा में मर्मिकता लाई है,

''मै दो पहियों के बिच लगा हुआ
एक छोटा निरर्थक शोभाचक्र हुँ,
जो पहियों के साथ घूमता है,
पर साथ को आगे नहीं बढ़ाता।
और न धरती को ही छु पाता है।''

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप में हम कर सकते है कि धर्मवीर भारती ने अंधायुग में कलापक्ष को सशक्त बनाने के लिए भाषा की लगबग सभी विशेषताओं का प्रयोग किया है जिसके कारण अंधायुग की भाषा–शैली है जो पाठक और रसिक को अपनी ओर खिंच लेती है।

संदर्भ ग्रंथः–

धर्मवीर भारती का अंधायुग
डॉ. साधना भंडारी
(संस्कारणध्प्रकाशन वर्ष२००२,)
(प्रु.क.१०६,११०,१११,११२,११३)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.www.oldgrt.lbp.world